# Case study

**2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

कुछ लोग परिश्रम की अपेक्षा भाग्य को महत्त्व देते हैं। उनका कहना है कि जो भाग्य में होगा अवश्य मिलेगा, इसलिए दौड़-धूप करना व्यर्थ है। परंतु आलसी बनकर बैठे रहना और असफलता के लिए भाग्य को कोसना किसी प्रकार भी उचित नहीं। परिश्रम के बल पर मनुष्य भाग्य की रेखाओं को बदल सकता है। परिश्रमी व्यक्ति स्वावलंबी, ईमानदार और चरित्रवान होता है। परिश्रम के द्वारा ही मनुष्य अपनी, परिवार की, जाति की तथा राष्ट्र की उन्नति में सहयोग दे सकता है। अतः परिश्रम करने की प्रवृत्ति मनुष्य को विद्यार्थी जीवन से ही ग्रहण करनी चाहिए।

1. भाग्य को महत्त्व देने वालों का कहना है कि–

(क) जो भाग्य में नहीं होगा वही मिलेगा ☐ (ख) जो भाग्य में होगा, वह मिलेगा ☐

(ग) जो परिश्रमी होगा वही पाएगा ☐ (घ) भाग्य हमारा संरक्षक है ☐

2. क्या उचित नहीं है?

(क) आलसी बैठे रहना ☐ (ख) भाग्य को कोसना ☐

(ग) कर्म न करना ☐ (घ) 'क' और 'ख' दोनों ☐

3. परिश्रमी व्यक्ति कैसे होते हैं?

(क) स्वावलंबी, ईमानदार और चरित्रवान ☐ (ख) मूर्ख और आलसी ☐

(ग) बुद्धिमान और साहसी ☐ (घ) इनमें से कोई नहीं ☐